ओ३म्

'दिग्भ्रमित विष व के लिए वेदों की उपेक्षा अहितकर एवं हानिकारक'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

मनुश्य जीवन को संसार के वेदेतर सभी मत अद्यावधि प्रायः समझ नहीं सके हैं यही कारण है कि यह जानते हुए कि सत्य एक है, संसार में आज के आधुनिक व उन्नत युग में भी एक नहीं अपितु सैकड़ो व सहस्राधिक मत–मतान्तर प्रचलित हैं जिनकी कुछ बातें उचित व अधिकांष ा असत्य एवं अज्ञान पर आधारित हैं वेदमत, वैदिक धर्म अथवा आर्यसमाज वेदप्रचार मिष ान के अतिरिक्त हमें संसार में ऐसा कोई धार्मिक व सामाजिक मत दृश्टिगोचर नहीं होता जो अपने मत की सभी मान्यताओं की समीक्षा करता हो और अन्य मतों की समालोचना व समीक्षा को ध्यान में रखकर उनकी सत्यता को जानने व तर्क व युक्तियों सहित उदाहरणों सहित उनके सत्य होने की पुश्टि करने का प्रयास करता हों यही कारण है कि वेदेतर सभी मत मध्यकालीन अज्ञान व अन्धविष वासों से भरे हुए हैं जिन्हें यह तक ज्ञात नहीं है कि ईष वरोपासना का उद्देष य क्या है व इसकी सही व सर्वमान्य विधि क्या है वा हो सकती हैं इसे आज के युग का सबसे बड़ा आष चर्य ही कहेंगें एक बच्चा स्कूल में प्रविश्ट कराया जाता है तो वह वहां अपने अध्यापकों से जो पढ़ाया जाता है उसे सीखता हैं अध्यापक भी उससे पूछते हैं कि उसे समझ में आया या नहीं उसकी परीक्षा भी ली जाती है और जितना पढ़ाया गया होता है उसे जान लेने वा समझ लेने के बाद ही उसे उससे ऊपर की कक्षा में प्रोन्नत कर आगे के विशयों का ज्ञान दिया जाता हैं विद्यार्थी को अपने अध्यापकों से प्रष न पूछने, षंका प्रस्तुत करने व उसके सन्तोशप्रद उत्तर पाने का अधिकार होता है परन्तु जीवन के सबसे प्रमुख अंग जिससे हमारा वर्तमान व भावी जीवन सहित परजन्म की उन्नति वा अवनति जुड़ी हुई है, उस पर षंका करने व उत्तर पाने का अधिकार किसी मत–पंथ में नहीं हैं ऋशि दयानन्द एक पौराणिक मत के अनुयायी माता–पिता के यहां जन्में थें उन्होंने पहले अपने माता–पिता–आचार्यों व बाद में देष ा के सभी विद्वानों से मूर्तिपूजा की निस्सारता पर प्रष न किये, परन्तु आज तक कोई विद्वान व आचार्य उनके प्रष नों का समाधान नहीं कर पायां ऐसा होने पर भी देष ा–विदेष ा में बड़ी संख्या में लोगों द्वारा पाशाण, लौह व अन्य धातुओं की मूर्तियों की पूजा जारी हैं मूर्तिपूजा न केवल वेद विरुद्ध है अपितु इससे इस संसार को बनाने, चलाने व यथासमय प्रलय करने वाले ईष वर, जो घट–घट का वासी, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी व सच्चिदानन्दस्वरूप है, उसके ज्ञान वेदों में दी गई षि ाक्षा वा आज्ञा की अवज्ञा होती हैं देष ा व विष व में प्रचलित प्रायः सभी मतों की न्यूनाधिक यही अवस्था हैं आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वेद से इतर किसी मत, पंथ, सम्प्रदाय व तथाकथित धर्म आदि को यह जानने की चिन्ता ही नहीं है कि उनके मतों की मान्यताओं को जीवन में मानने व न मानने व उसके कुछ अनुकूल व विपरीत आचरण करने वालों की मृत्यु के बाद क्या अवस्था, दष ाा, गति, सद्गति व दुर्गति, उन्नति व अवनति होती है?

महर्शि दयानन्द के जीवन में उनके सामने ऐसे अनेक प्रष न थे जिन पर विचार कर ही उन्होंने अज्ञान, अविद्या, अन्धविष वास, कुरीति, मिथ्या परम्पराओं पर विचार किया था और अथक प्रयासों के बाद उन्हें वेद मत के रूप में एक सच्चा, अविद्या व अज्ञान से सर्वथा मुक्त, सद्ज्ञान व सदाचरणों से युक्त जीवन को उन्नत करने वाला, मनुश्य जीवन में अभ्युदय व मृत्यु होने पर मोक्ष प्रदान करने वाला मत ज्ञात व प्राप्त हुआ थां ऋशि दयानन्द को सच्ची ईष वरोपासना से विष व का कल्याण करने की ईष वरीय प्रेरणा प्राप्त हुई थीं इसी भावना से उन्होंने सन् 1863 व उसके बाद अपनी मृत्युपर्यन्त वेद की षि ाक्षाओं के प्रचार व प्रसार के कार्य किये जिसमें मूर्तिपूजा व अन्य विशयों पर अनेक मत–मतान्तर के लोगों से षाास्त्रार्थ, देष ाटन कर लोगों को सदुपदेष ा से लाभान्वित करना, आर्यसमाज की स्थापना, सत्यार्थप्रकाष ा सहित ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन, समाज सुधार व देष ा को स्वतन्त्र कराने की प्रेरणा सहित जीवन के सभी धार्मिक व सामाजिक क्षेत्रों में अपूर्व योगदान दियां उन्होंने जो कार्य किया वैसा महाभारत काल के बाद देष ा व विष व के किसी महापुरुश ने नहीं कियां इसे देष ा व समाज की विडम्बना ही कह सकते हैं कि मत–मतान्तरों को मानने वाले सभी लोग अपने अपने मत के आचार्यों की अच्छी व अज्ञानता की बुरी बातों को तो ग्रहण कर लेते हैं परन्तु सत्यमत वेद, धर्म, विचार, सिद्धान्त, आचरण आदि को जानने की किसी में विष ोश उत्सुकता व पिपासा नहीं देखी जातीं यदि ऐसा होता तो आज विष व में एक ही मत व धर्म होता जो केवल सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर ही आधारित होता जिसे जानने व अपनाने का प्रयास ऋशि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में किया थां सफलता मिलने पर ऋशि दयानन्द ने देष ा व विष व के लोगों

का कल्याण करने के लिए वेदों के प्रचार के निमित्त आर्यसमाज की स्थापना कर सत्यार्थप्रकाष ा एवं वेदभाश्य सहित सत्य ज्ञान युक्त अनेक ग्रन्थों की रचना की जिससे देष ा देष ान्तर के लोगों का युग–युगान्तरों तक मार्ग दष ान हो सकें

सत्य पर आधारित प्रमुख धार्मिक व सामाजिक मान्यतायें क्या हैं जिनसे मनुश्य अभ्युदय व मोक्ष को प्राप्त होता है? इसके लिए सभी मत–पन्थों के ग्रन्थों सहित वेद व वैदिक साहित्य की परीक्षा करना अपेक्षित हैं यह कार्य ऋशि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाष ा एवं अन्य ग्रन्थ लिख कर कियां अपनी षि ाक्षा पूर्ण करने तक उनका उद्देष य सत्य ज्ञान की खोज करना थां अपना अध्ययन पूरा होने पर उन्होंने पाया संसार में वेद ज्ञान के मूल स्रोत हैं उन्होंने वेदों की परीक्षा की तो पाया कि वेद सृश्टि के आरम्भ में ईष वर से उत्पन्न हुए थें वेद ईष वर का निज ज्ञान है जो वह हर कल्प में सृश्टि के आरम्भ में चार ऋशियों को उत्पन्न कर उन्हें एक एक वेद का ज्ञान देता हैं यह चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं और जिन ऋशियों को यह ज्ञान दिया जाता है उनके नाम क्रमष ाः अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा हैं चारों वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं इनमें इतिहास व सृश्टिक्रम के विपरीत कोई बात नहीं हैं वेद बतातें हैं कि इस संसार को बनाने, चलाने व प्रलय करने वाली एक सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, सर्वष ाक्तिमान, सर्वज्ञ व पूर्व कल्पों में अनन्त बार सृश्टि रचना करने वाली एक अनुभवी सत्ता **'ईष वर'** हैं ईष वर, जीवात्मा और प्रकृति के यथार्थ स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव का ज्ञान भी वेदों में यथार्थ रूप में वर्णित हैं वेदों मत–मतान्तरों के ग्रन्थों की तरह एक हजार व दो हजार वर्श पूर्व की बातों का इतिहास व कहानी किस्से नहीं हैं अपितु कल्प–कल्पान्तर में एक समान व एक रस रहने वाला सद्ज्ञान हैं वेदों का ईष वर सर्वज्ञ हैं कभी भूल नहीं करता और न कभी किसी के प्रति पक्षपात ही करता हैं वह आर्यों की संख्या बढ़ाने के लिए हिंसा की प्रेरणा नहीं देता और न मनुश्य जाति को मत–मतान्तरों में बांटता हैं उसका ज्ञान व षि ाक्षायें सार्वभौमिक, सर्वकालिक एवं मनुश्य मात्र सहित प्राणियों के हित के लिए हैं वेदों के अनुसार श्रेश्ठ व ष ुभ कर्म वा आचरण करने वाले लोग आर्य होते हैं और इसके विपरीत अष ुभ कर्म व आचरण करने वाले अनार्य, दुश्ट, राक्षस व पिष ाच होते हैं जीवात्मा स्वभावतः अल्पज्ञ है और वेदों का अध्ययन कर विद्वान बनता हैं वेदों की षि ाक्षायें ऐसी हैं जिनका आचरण करने से देष ा व संसार में सुख व ष ान्ति की वृद्धि होती हैं वेदों के अध्ययन व आचरण से मनुश्य का ष ारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक विकास वा उन्नति होती हैं परिवार में प्रेम व सौहार्द की वृद्धि होने से सभी सदस्यों की सार्वत्रिक उन्नति होती हैं वेद मनुश्यों को युवावस्था में एक पुरुश का एक स्त्री से एक बार ही विवाह करने का विधान करते हैं वेदों के अनुसार समाज को श्रेश्ठ समाज बनाने के लिए मनुश्य के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था का विधान है जिसका जन्म की जाति आदि से कुछ लेना देना नहीं होतां वेद किसी मनुश्य को उसके ज्ञान व कर्मों के अनुसार महान् व पतित मानते हैं वेद मूर्तिपूजा का विधान नहीं करते अपितु ईष वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना का विधान करते हैं जिसका विस्तार महर्शि पतंजलि के योगदष ान में मिलता हैं अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, बहुपत्नीप्रथा, परदा–प्रथा, असंयमित जीवन व व्यभिचार, पालन पोशण की क्षमता से अधिक सन्तान को निशिद्ध करते हैं वेद के अनुसार सभी मनुश्यों व अन्त्यजों तक को अन्य ब्राह्मण आदि के समान वेदों का अध्ययन करने का पूरा अधिकार हैं किसी भी प्रकार की अस्पष यिता, छुआछूत व दूसरों के प्रति असमानता का व्यवहार वेदों के अनुसार निशिद्ध हैं युवा विधवाओं का पुनर्विवाह आपद्धर्म हैं वेद ईष रोपासना वा ब्रह्मयज्ञ सहित देवयज्ञ अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ सहित बलिवैष वदेवयज्ञ का विधान भी करते हैं इन्हें करने से देष ा व समाज उन्नत होता है और मनुश्य के ष ुभ कर्मों में वृद्धि होने से ईष वर के द्वारा उसको जन्म–जन्मान्तरों में सुख मिलने सहित मोक्ष की भी यथासमय प्राप्ति होती हैं वेदों के अध्ययन व आचरण से मनुश्य अंधविष वासों एवं पाखण्डों से मुक्त होकर सच्चा मानव जीवन व्यतीत करने में सक्षम होते हैं संसार में सुख, ष ान्ति, सबका कल्याण व उन्नति का वातावरण बनता हैं सब एक दूसरे की सुख समृद्धि सहित दुःखों में सहायक होते हैं वेदों का ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार आचरण करने से मनुश्य स्वस्थ रहता है व उसके बल व आयु में भी वृद्धि होती हैं ऐसे अनेक लाभ वेदों के अध्ययन व तदवत् आचरण करने से प्राप्त होते हैं जबकि मत–मतान्तरों के ग्रन्थों को पढ़ने से बुद्धि व ज्ञान की वृद्धि न होकर मनुश्य मध्यकालीन अविद्या व अज्ञान से ग्रस्त होकर अनुचित व अनावष यक अनेक कार्यों को करके स्वयं दुःखी होते हैं व देष ा व समाज को भी दुःखी करतं हैं आज संसार में जो अष ान्ति, प्रतिस्पर्धा, छीना–छपटी, गलत तरीकों से सम्पत्ति में वृद्धि, निर्दोशों की हत्या वा हिंसा, अन्याय, ष ोशण, येन–केन–प्रकारेण सीएम व पीएम बनने व सत्ताधीष ा बनने की होड़, कर्तव्य की उपेक्षा व अवहेलता, अनाचार, अत्याचार व भ्रश्टाचार आदि की बातें हैं वह सब मत–मतान्तरों की अविद्या व वेदों के अप्रचार के कारण ही हैं वेदानुसार आचरण करने से मनुश्य का वर्तमान जीवन उन्नत होता व सुधरता है साथ ही ईष वरोपासना, अग्निहोत्र, परोपकार, दान व ष ुभकर्मों से मृत्योपरान्त जन्म–मरण के बन्धनों व दुःखों से मुक्ति

सहित मोक्ष की प्राप्ति भी होती है जो कि अन्य किसी मत–मतान्तर की मान्तयताओं पर आचरण करने से नहीं होतीं वेदाध्ययन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति वेदों के कथन को ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण होने के कारण उस पर विष वास करता है न कि बाबा वाक्यं प्रमाणम् के कारणं वेदों में मध्यकालीन अज्ञानता व इनकी स्वहित व परहानि जैसी षि ाक्षायें नहीं हैं अतः सभी को सब मतों का अध्ययन सहित वेदों का अध्ययन कर वेदों को अपनाना चाहिये जिससे उनका यह जन्म व परजन्म उन्नत व सफल हो सकें यदि हमने वेदाध्ययन कर विवेक प्राप्त कर सत्य का आचरण व असत्य का त्याग नहीं किया तो हमें इसके परिणाम इस जन्म सहित भविश्य में अनेक नीच योनियों में जन्म लेकर भोगने पड़ेगें इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् ष ामं्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

ओ३म्

‘ईष वरोपासना से मनुश्य जीवन के अन्तिम लक्ष्य ईष वर–साक्षात्कार वा मोक्ष को प्राप्त होता है’

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

हम मनुश्य हैं इसलिए हमें मनुश्योचित कार्य ही करने अभीश्ट हैं मनुश्योचित कार्यों में मुख्य कार्य ज्ञान की प्राप्ति और तदनुसार कर्म करना हमारा कर्तव्य सिद्ध होता हैं हम समझते हैं कि कोई मनुश्य व विद्वान, किसी भी मत व सम्प्रदाय का क्यों न हो, यह नहीं कह सकता कि ज्ञान प्राप्ती और तदनुकूल कर्म व आचरण करना मनुश्यों का कर्तव्य नहीं हैं अब यदि यह बात सर्वमान्य है तो फिर हमें अपने जीवन का अवलोकन अर्थात् आत्मालोचन कर यह जानना है कि क्या हमने ज्ञान की प्राप्ति के लिए आवष यक कर्तव्यों का पालन किया हैं हम समझते हैं कि यदि इसका गम्भीरता से विचार व चिन्तन करें तो हमें लगेगा कि हमसे बहुत भूलें व त्रुटियां हुई हैं यद्यपि हमारे जीवन का बहुमूल्य समय निकल चुका है परन्तु फिर भी यदि हम सम्भल जायें तो आने वाले समय में हम अपने जीवन में काफी सार्थक व सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं इससे हमारा यह जीवन भी सुधरेगा और परजन्म में भी हमारी उन्नति होगी, इसकी स्वीकृति हमारी आत्मा सहित हमारे ऋशियों के तर्क व युक्तिसंगत विचारों से हमें मिलती हैं

ज्ञान प्राप्ति का उद्देष य सत्य व असत्य का विवेक कर जीवन को सत्य के मार्ग पर चलाना है और जीवन में जो असत्य व अज्ञानयुक्त बातें व आचरण हैं, संस्कार व क्रियायें हैं, उन्हें छोड़ना हैं यही मनुश्य जीवन का उद्देष य भी हैं ज्ञान प्राप्ती गुरु से हुआ करती हैं गुरु वह होता है जो पूर्ण व अधिकांष ा विशयों का ज्ञान रखता हो तथा जिसमें दूसरे मनुश्यों के कल्याण की भावना हों ऐसे गुरु को प्राप्त होकर हम अपना अज्ञान व अविद्या को दूर कर सकते हैं ऋशि दयानन्द ने भी इसी प्रकार प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर व उनकी सेवा–सुश्रुशा कर उनसे ज्ञान प्राप्त किया थां इसी सेवा, गुरु की निकटता एवं अध्ययन से वह आज विष व के सर्वोपरि गुरु के आसन पर प्रतिश्ठित हैं उन्होंने संसार को वह ज्ञान दिया जिसे संसार भूल चुका थां मिथ्या ज्ञान सारे संसार में व्याप्त फैला हुआ थां उन्होंने न केवल सद्ज्ञान ही दिया अपितु मिथ्याज्ञान की समीक्षा कर उसे अनावष यक और जीवन के लिए हानिकारक सिद्ध कियां सत्यार्थप्रकाष ा के रूप में उनके द्वारा दिया ज्ञान आज अनेक लोगों के घरों में विद्यमान हैं

संसार में ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु किसे बनाया जाये? ऐसी कौन सी पुस्तक है जिसमें मनुश्यों के जीवन के उद्देष य का ज्ञान कराने सहित उसकी प्राप्ति के साधनों का वर्णन भी हैं इन प्रष नों पर विचार करने पर सच्चा गुरु वह सिद्ध होता है जो स्वामी विरजानन्द सरस्वती और स्वामी दयानन्द सरस्वती के समान ज्ञानी व विद्वान हो हों ईष वरोपासक होने के साथ समाधि को भी प्राप्त हो तथा जिसमें समाज व विष व के कल्याण की भावना भी हों ऐसा गुरु तो सम्भवतः संसार में मिलना कठिन है परन्तु ईष वरीय ज्ञान वेद, उपनिशद्, दष ान, विष ुद्ध

मनुस्मृति, ऋशि दयानन्द जी के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाष ा, ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि का अध्ययन कर मनुश्य अपने उद्देष यों को जानकर इनमें वर्णित साधनों को आचरण में लाकर अपने जीवन को सफल कर सकता हैं पूर्ण सफलता ईष वर के साक्षात्कार होने पर प्राप्त होती हैं इसी के लिए हमारे वेदज्ञ ऋशियों व विद्वानों सहित ऋशि दयानन्द ने ईष वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना के रूप में ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईष वरोपासना, देवयज्ञ आदि पंच महायज्ञों का विधान किया हैं उपासना जिसमें ईष वर की स्तुति व प्रार्थना भी अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई है, को ऋशि दयानन्द के षब्दों को जान लेना उचित होगां सत्यार्थप्रकाष ा के सप्तम समुल्लास में प्रष नोत्तर षैली में ऋशि दयानन्द लिखते हैं कि परमेष वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए या नहीं? (उत्तर) करनी चाहिएं (प्रष न) क्या स्तुति आदि करने से ईष वर अपना नियम छोड़ स्तुति, प्रार्थना करने वाले का पाप छुड़ा देगा? (उत्तर) नहीं (प्रष न) तो फिर स्तुति प्रार्थना क्यों करना? (उत्तर) उनके करने का फल अन्य ही हैं (प्रष न) क्या है? (उत्तर) स्तुति से ईष वर में प्रीति, उस के गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होनां (प्रष न) इनको स्पश्ट करके समझाओं इसके उत्तर में ऋशि दयानन्द ने यजुर्वेद का 40/8 मन्त्र प्रस्तुत किया है और इसका अर्थ करते हुए ईष वर की स्तुति के विशय में लिखा है कि वह परमात्मा सब में व्यापक, षीघ्रकारी और अनन्त बलवान् जो षुद्ध, सर्वज्ञ, सब का अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध, परमेष वर अपनी जीवरूप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता हैं यह सगुण स्तुति अर्थात् परमेष वर के जिस–जिस गुण को बोलकर, जानकर व मन में वैसे भावों को बनाकर स्तुति करना वह सगुण, (अकाय) अर्थात् वह कभी षरीर धारण व जन्म नहीं लेता, जिस में छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता, जिस में क्लेष ा, दुःख, अज्ञान कभी नहीं होता, इत्यादि जिस–जिस राग, द्वेशादि गुणों से पृथक् मानकर परमेष वर को स्तुति करना है वह निर्गुण स्तुति हैं **इस से फल यह है कि जैसे परमेष वर के गुण है वैसे गुण, कर्म, स्वभाव अपने भी करनां** जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होंवें और जो केवल भांड के समान परमेष वर के गुण–कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र को नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ हैं

प्रार्थना का सत्यार्थप्रकाष ा के सप्तम् समुल्लास में उल्लेख कर ऋशि ने आठ वेदमंत्र दिये हैं और उनके अर्थ किये हैं हम प्रथम तीन प्रार्थना मंत्रों का ही अर्थ यहां प्रस्तुत कर रहे हैं वह लिख्श ाते हे अग्ने! अर्थात् प्रकाष ास्वरूप परमेष वर आप की कृपा से जिस बुद्धि की उपासना विद्वान्, ज्ञानी और योगी लोग करते है उसी बुद्धि से युक्त हम को इसी वर्तमान समय में आप बुद्धिमान् कीजियें ं 1 ं आप प्रकाष ास्वरूप हैं, कृपा कर मुझ में भी प्रकाष ा स्थापन कीजियें आप अनन्त पराक्रम युक्त हैं, इसलिये मुझ में भी कृपाकटाक्ष से पूर्ण पराक्रम धरियें आप अनन्त बलयुक्त हैं इसलिये मुझ में भी बल धारण कीजियें आप अनन्त सामर्थ्ययुक्त हैं, मुझ को भी पूर्ण सामर्थ्य दीजियें आप दुश्ट काम और दुश्टों पर क्रोधकारी हैं, मुझ को भी वैसा ही कीजियें आप निन्दा, स्तुति और स्व–अपराधियों का सहन करने वाले हैं, कृपा से मुझ को भी वैसा ही कीजियें ं 2 ं हे दयानिधे आप की कृपा से जो मेरा मन जागते में दूर–दूर जाता दिव्यगुणयुक्त रहता है, और वही सोते हुए मेरा मन सुशुप्ति को प्राप्त होता या स्वप्न में दूर–दूर जाने के समान व्यवहार करता है, सब प्रकाष ाकों का प्रकाष ाक, एक वह मेरा मन षि ावसंकल्प अर्थात् अपने और दूसरे प्राणियों के अर्थ कल्याण का संकल्प करनेहारा होवें किसी की हानि करने की इच्छायुक्त कभी न होवें ं 4 ं अन्य मन्त्रों के अर्थों के लिए पाठक कृपया सत्यार्थप्रकाष ा का अध्ययन करने की कृपा करें प्रार्थना विशय का समापन करते हुए ऋशि लिखते हैं कि इसी प्रकार परमोष वर भी सब के उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है हानिकारक कर्म में नहीं जो कोई गुड़ मीठा है ऐसा कहता है उस को गुड़ प्राप्त वा उस को स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है उस को षीघ्र या विलम्ब से गुड़ मिल ही जाता हैं

उपासना का उल्लेख कर ऋशि कहते हैं कि **जिस पुरुश के समाधियोग से अविद्यादि मल नश्ट हो गये हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिस ने लगाया है उस को जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता हैं** उपासना षब्द का अर्थ समीपस्थ होना हैं अश्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने ओर उस को सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामीरूप से प्रत्यक्ष के लिए जो–जो काम करना होता है वह–वह सब करना चाहयें स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाष ा में भी ऋशि ने स्तुति, प्रार्थना व उपासना पर संक्षेप से प्रकाष ा डाला हैं स्तुति के विशय में ऋशि कहते हैं कि ईष वर का गुण कीर्तन करना, उसके सत्यस्वरूप का श्रवण और ज्ञान होना स्तुति है जिसका

फल ईष वर से प्रीति आदि होते हैं प्रार्थना वह होती है कि जिसमें अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईष वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं, उसके लिये याचना करना प्रार्थना है और इसका फल उपासक में निरभिमानता का होना आदि होता हैं उपासना में ईष वर के पवित्र गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर उनके अनुरूप अपने गुण, कर्म व स्वभाव करना होता हैं ईष वर को सर्वव्यापक और अपनी आत्मा को ईष वर से व्याप्य जान कर ईष वर के समीप हम और हमारे समीप ईष वर है, ऐसा निष चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती हैं इस का फल ज्ञान की उन्नति आदि हैं इससे ज्ञात होता है कि उपासना का चरम लक्ष्य ईष वर का साक्षात्कार वा प्रत्यक्ष अर्थात् समाधि अवस्था में उसका निर्भ्रान्त वा निष चयात्मक ज्ञान हैं

ईष वर की उपासना से मनुश्य में मनुश्योचित दिव्य गुणों का आधान होता हैं आत्मा के मल दूर होते हैं आत्मा पवित्र व निर्मल होकर ईष वर की मित्रता को प्राप्त होता हैं जीवात्मा का ज्ञान बढ़ता व उसमें अज्ञान का नाष ा होता हैं उपासना में ईष वर की वेद मन्त्रों व उसके अर्थों व भावों के अनुरूप ईष वर की स्तुति व प्रार्थना की जाती हैं स्तुति करने से ईष वर से प्रीति हो जाती है और प्रार्थना से जीवात्मा कें अहंकार का नाष ा होता हैं ईष वरोपासना के साथ मनुश्य के लिए देवयज्ञ अग्निहोत्र करना भी आवष यक हैं इससे मनुश्य का व्यक्तिगत लाभ होने सहित समाज व देष ा भी लाभान्वित होते हैं ईष वरोपासना और देवयज्ञ मनुश्य को सत्य के ग्रहण में प्रेरित व प्रवृत्त करते हैं और असत्य, अज्ञान व अविद्या को दूर करते हैं मनुश्य अविद्या से मुक्त होकर विद्या से युक्त होता हैं सभी लोग यदि सच्चे ईष वरोपासक व याज्ञिक हो जायें तो इससे समाज अज्ञान, अन्धविष वास, अविद्या, मिथ्याविष वासों व परम्पराओं सहित पाप व कुटिलता के आचरणों से मुक्त हो सकता हैं ऐसा होने पर आदष र्ा मनुश्य जीवन बनकर आदष र्ा समाज की रचना होती हैं अन्ततः उपासक मनुश्य को ईष वर का साक्षात्कार, उसका प्रत्यक्ष व निर्भ्रान्त ज्ञान होकर ईष वर विशयक व अन्य सभी प्रकार के भ्रम दूर हो जाते हैं मृत्यु होने तक जीवनमुक्त अवस्था में रहता है और मृत्यु होने पर जन्—मरण से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त होता हैं यही मनुश्य जीवन का अन्तिम चरम लक्ष्य हैं इसी के साथ इस चर्चा को समाप्त करते हैं ओ३म् ष ाम्

—मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला—2
देहरादून—248001
फोनः09412985121

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम तपोवन में आचार्य आष ीश दष र्ानाचार्य का व्याख्यान

‘सभी आर्य बन्धुओं को प्रभावष ाली वक्ता व वेद प्रचारक बनने का अभ्यास करें: आचार्य आष ीश दष र्ानाचार्य’

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के ग्रीश्मोत्सव के 14 मई 2017 को समापन समारोह में व्याख्यान करते हुए आचार्य आष ीश दष र्ानाचार्य जी ने कहा कि हम यहां सब एक वृहत परिवार के सदस्यों के रूप में उपस्थित हैं आप लोग किस प्रकार से आगे बढ़े इस विशय पर आप सब मंथन करते होंगे? आज यहां **‘स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती स्मृति समारोह’** को मनाते हुए इस विशय का भी मंथन करें कि हम अपने इस वृहद आर्य परिवार व अपने निजी परिवारों को कैसे आगे बढ़ायें? परिवार आपस में प्रेम, सौहार्द, आत्मीयता, अपनत्व आदि गुणों को अपनाने से उन्नत होता हैं इन गुणों को जीवन में धारण कर परिवार व उसके सदस्य दृण बनते हैं विद्वान आचार्य आष ीश जी ने आगे कहा कि सभा का प्रभावष ाली ढंग से संचालन करना और एक समर्थ वक्ता के अच्छे गुण इस सभागार में उपस्थित सभी बन्धुओं में नहीं हैं उन्होंने कहा कि यदि हम अपने अन्दर छुपे सामर्थ्य का उपयोग सीख लें तो इससे हमारे एक प्रभावष ाली सफल वक्ता व प्रचारक बनने की योग्यता में वृद्धि हो सकती हैं आचार्य जी ने कहा कि अधिकांष ा लोगों में व्याख्यान देने के प्रति संकोच का भाव देखा जाता हैं हम लोग अपने आस पास के लोगों को अपने ज्ञान के अनुसार सीखाने का प्रयास भी व्याख्यान करने की क्षमता न होने के कारण नहीं कर पाते हैं इसका कारण हमारे अन्दर संकोच के भाव का होना

हैं आचार्य जी ने श्रोताओं को कहा कि आपके अन्दर महान सामर्थ्य विद्यमान हैं आप सभी लोग बच्चों को अपने पास बैठायें और उन्हें आर्यसमाज व वैदिक धर्म की मान्यताओं को सिखाने का प्रयास करें इसका आप आज यहां संकल्प लें यदि यहां बैठे लोग इतना साहस कर लें तो वह अपनी अपनी योग्यता के आधार पर बड़ी संख्या में मिष ानरी प्रचारक बन जायेंगें आचार्य जी ने कहा कि जब सत्य को फैलाने की बात आती है तो हम स्वयं को अर्थ के दान तक ही सीमित कर लेते हैं यहां उपस्थित सभी लोग अपने भीतर एक सफल व प्रभावष ाली वक्ता बनने की सामर्थ्य विकसित करने का प्रयास करें उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति तर्क से ही किसी बात को नहीं समझते हैं कुछ लोग ऐसे होते हैं जो आपसी मधुर सम्बन्ध बनने पर उपदेष ाक के व्यवहार को देख कर बात समझते हैं पहले दूसरों के प्रति अपनत्व का भाव बनाकर उनके प्रति संवेदनष ील बनना होगा और उसके बाद ही तर्क से उन्हें अपनी बातों को समझाया जा सकता हैं आचार्य जी ने श्रोताओं को अपनी सामर्थ्य पहचानने का आह्वान कियां उन्होंने इसके समर्थन में लोगों को हाथ खड़ा करने को कहां लोगों ने अपनी स्वीकृति में हाथ खड़े किये और अपनी यह इच्छा प्रकट कि वह अपने अन्दर अच्छा वक्ता बनने की सामर्थ्य का विकास करेंगे और उससे वैदिक धर्म का प्रचार करेंगें वैदिक धर्म के प्रचार का अर्थ है सत्य विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों को देष ा व समाज में फैलानां इन्हें फैलाने में सभी श्रोतागण आगे आकर कार्य करेंगें

आचार्य आष ीश दष ानाचार्य जी ने आर्यसमाज में होने वाले साप्ताहिक सत्संगों की चर्चा की और कहा कि आर्यसमाज में होने वाले यज्ञ, भजन व व्याख्यान में से लगभग 20 मिनट का समय बच्चों वा युवाओं को देना चाहिये जिससे वह माइक पर श्रोताओं के सामने किसी विशय को निःसंकोच भाव से प्रस्तुत करने का अभ्यास कर सकें उन्होंने आर्य समाज के अधिकारियों को यह भी परामष र्ा दिया कि आर्यसमाज के सत्संगों का संचालन बच्चों वा युवाओं से बदल बदल कर कराना चाहिये जिससे उनमें एक अच्छे वक्ता बनने के गुणों का विकास हो सकें इसके अतिरिक्त भी उन्हें आर्यसमाजों में अन्य प्रकार की अपनी प्रस्तुतियों के लिए समय दिया जाना चाहियें आर्यसमाज के सत्संगों व अन्य आयोजनों में आर्यसमाज के स्थापित विद्वान वक्ताओं द्वारा अपने व्याख्यान के प्रथम 20 मिनटों में बच्चों व युवाओं से बातें करनी चाहियें और उन्हें उद्बुद्ध करने का प्रयास करना चाहियें ऐसा करने से आर्यसमाज के सत्संगों में बच्चों व युवाओं की संख्या बढ़ेगीं आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज के सत्संग कार्यक्रम यदि इस प्रकार बदलेंगे तो इससे सकारात्मक परिवर्तन आयेगां

आचार्य जी ने कहा कि बच्चों के मन में अनेक षंकायें व प्रष न होते हैं जिनका समाधान उन्हें अपने घर में माता–पिता व अन्य परिवारजनों से नहीं मिल पातां इसका समाधान हम यहां तपोवन आश्रम में षि ाविर लगाकर प्रस्तुत करते हैं बच्चों व युवाओं को उनकी आयु के अनुसार वीडियों दिखाने सहित ज्ञानवृद्धि के अन्य तरीकों से उन्हें वैदिक धर्म व समाज विशयक जानकारी देते हैं जो उन्हें अपनी पुस्तकों व परिवार जनों से प्राप्त नहीं होतीं आचार्य जी ने आगामी जून, 2017 में युवक व युवतियों के लिए पृथक पृथक लगाये जा रहे दो षि ाविरों की जानकारी भी दीं आचार्य जी ने यह भी बताया कि उन्होंने विगत षि ाविरों में ऐसे बच्चे तैयार किये हैं जो दूसरे बच्चों को प्रषि ाक्षण दे सकते हैं आचार्य जी के इस व्याख्यान की मंचस्थ सभी विद्वानों एवं सभागार में उपस्थित श्रोताओं से करतल–ध्वनि कर सराहना एवं प्रष ंसा कीं उनके बाद आर्य विद्वान श्री उमेष ा चन्द्र कुलश्रेश्ठ जी का प्रवचन हुआं उन्होंने अपने व्याख्यान के आरम्भ में कहा कि वह आचार्य आष ीश जी के विचारों से पूर्णतः सहमत हैं आचार्य उमेष ा चन्द्र कुलश्रेश्ठ जी का व्याख्यान हम अपने आगे के लेखों के माध्यम से प्रस्तुत करेंगें ओ३म् ष ामं्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

ओ३म्

'नई पुस्तक 'स्वामी नारायण–सम्प्रदाय और मूर्तिपूजा'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

उपर्युक्त पुस्तक कल हमें डाक से प्राप्त हुई हैं यह पुस्तक हमें आर्य विद्वान और ऋशि भक्त श्रद्धेय श्री भावेष ा मेरजा जी ने प्रेशित की हैं यह पुस्तक गुटका आकार में हैं पुस्तक के लेखक आर्यजगत के वरिश्ठ विद्वान ऋशि भक्त डा. भवानीलाल भारतीय, श्रीगंगानगर निवासी हैं सारा आर्यजगत डा. भवानीलाल भारतीय जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से परिचित हैं इस पुस्तक का प्रकाष ान आर्य साहित्य के प्रमुख प्रकाष ाक **'श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी–राजस्थान'** ने किया हैं 64 पृश्ठों वाली इस पुस्तक का मूल्य मात्र 10.00 रूपये हैं प्रकाष ाक द्वारा यह पुस्तक 400 रूपये सैकड़ा की मूल्य दर से भी उपलब्ध कराई जा रही हैं पुस्तक के अन्त में आर्यसमाज के दस नियम भी दिये गये हैं

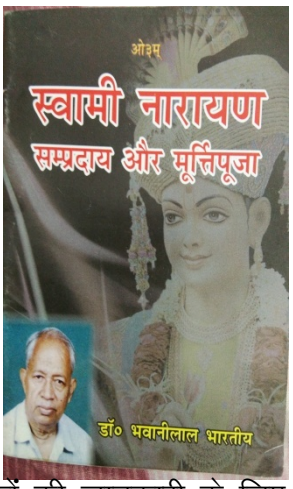

पुस्तक का परिचय व महत्ता के विशय में **'भूमिका'** में प्रकाष ा डाला गया हैं भूमिका लेखक का नाम पुस्तक में नहीं दिया गया हैं हमें लगता है कि यह भूमिका आर्य विद्वान श्री भावेष ा मेरजा जी द्वारा लिखित हो सकती है और इस पुस्तक के प्रकाष ान का श्रेय भी उन्हीं को प्रतीत होता हैं पुस्तक व भूमिका दोनों महत्वपूर्ण हैं हम यहां पाठकों की जानकारी के लिए पूरी भूमिका प्रस्तुत कर रहे हैं

भूमिका में लिखा है कि 'आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी (1825–1883 ई0) ने समस्त मानव जाति के ऐक्य एवं सर्वविध कल्याण के लिए ऋग्वेदादि चार मन्त्र संहिताओं को ईष वर प्रणीत घोशित कर उन्हीं की षि ाक्षाओं के अनुसार अपने **'सत्यार्थप्रकाष ा'** आदि ग्रन्थों की रचना की हैं स्वामी जी मानव ऐक्य के पुरोधा थें सत्य ओर न्याय के आधार पर मानव ऐक्य के स्वप्न को साकार करने के लिए वे आजीवन पुरुशार्थ करते रहे और इसी कार्य को करते हए उन्होंने अपना बलिदान दियां स्वामी जी ने वेद और ऋशि–मुनियों द्वारा प्रणीत वेदानुकूल ग्रन्थों की सार्वभौम उदात्त षि ाक्षाओं के वैषि वक प्रचार–प्रसार के लिए आर्यसमाज की स्थापना कीं

स्वामी जी की दृश्टि में विभिन्न मत–पन्थ–सम्प्रदायों के कारण सत्य सनातन वेद धर्म की महती हानि हई हैं अतः स्वामी जी ने धर्म या अध्यात्म के नाम पर खड़े किए गए व्यक्ति केन्द्रित मत–पन्थ–सम्प्रदायों की वेद–विरुद्ध मान्यताओं तथा क्रियाकलापों का खण्डन कर इन मत–पन्थ–सम्प्रदायों को समूल नश्ट करने का अभियान चलायां इसी अभियान के अन्तर्गत उन्होंने **'षि ाक्षापत्री ध्वान्त निवारण'** (अथवा 'स्वामी नारायण मत खण्डन') नामक एक लघु ग्रन्थ लिखा जिसमें गुजरात में पैदा हुए स्वामी नारायण सम्प्रदाय की मूल पुस्तक 'षि ाक्षा–पत्री' की प्रमाण–पुरस्सर समालोचना की गई हैं स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाष ा के 11वें समुल्लास में भी स्वामी सहजानन्द (1781–1830 ई0) द्वारा चलाए गए इस सम्प्रदाय की समीक्षा की हैं

आज यह स्वामी नारायण सम्प्रदाय केवल गुजरात में सीमित नहीं रहा हैं देष ा के कई अन्य प्रान्तों, महानगरों में तथा विष व के अनेक देष ाों में इस सम्प्रदाय के मन्दिर बन गए हैं दिल्ली का प्रसिद्ध अक्षरधाम भी इसी सम्प्रदाय का एक प्रमुख केन्द्र हैं

इसी सम्प्रदाय के एक विद्वान् ने **'सनातन धर्म अभिगम'** नामक अपनी एक गुजराती पुस्तक में मूर्तिपूजा का समर्थन करने का प्रयास किया हैं आर्यसमाज के लब्धप्रतिश्ठित विद्वान् लेखक प्रो0 (डा0) भवानीलाल जी भारतीय ने **'सनातन धर्म अभिगम'** के मूर्तिपूजा प्रकरण की तार्किक समालोचना **'स्वामी नारायण मत और मूर्तिपूजा'** लेख के रूप में लिखी है, जिसका प्रकाष ान **'आर्यजगत्'** साप्ताहिक के दो अंकों (दि0 16–22 तथा

23–29 अक्टूबर 2016) में किया गया हैं पाठकों का ज्ञानवर्धन हो सके इस प्रयोजन से डॉ0 भारतीय जी के इस लेख को इस पुस्तिका के रूप में प्रकाषि ात किया जाता हैं

इसी के साथ–साथ डॉ0 भारतीय जी प्रणीत **'भारतवर्शीय मत मतान्तर समीक्षा'** नामक ग्रन्थ का **'स्वामी नारायण मत खण्डन'** विशयक प्रकारण तथा स्वामी दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाष ा के 11वें समुल्लास में प्रस्तुत स्वामी नारायण की समीक्षा विशयक प्रकरण का भी इस पुस्तिका में समावेष ा किया गया हैं

आष ाा है कि इस पुस्तिका के तटस्थ अध्ययन से पाठकों को स्वामी नारायण मत विशयक यथार्थ जानकारी प्राप्त होगीं ' (भूमिका यहां पर समाप्त होती हैं)

हमें यह पुस्तक कल 24 मई 2017 को डाक में मिलीं कल ही हमने इसे आद्योपान्त पढ़ां पुस्तक अपने विशय पर प्रमाणित पुस्तक हैं यह वेद और आर्यसमाज की मान्यताओं के अनुरूप हैं इससे नारायण स्वामी मत द्वारा प्रचारित मूर्तिपूजा विशयक समस्त भ्रान्तियों का निराकरण व समाधान हो जाता हैं स्वामी नारायण मत के अनुयायी साधु श्री हरिदास द्वारा अपनी पुस्तक़ **'सनातन धर्म अभिगम'** में मूर्तिपूजा को लेकर जिन भ्रमों का प्रसारण व प्रचार किया गया है, उसका सप्रमाण खण्डन डा. भारतीय जी की इस पुस्तक की सामग्री व उनके लेख हुआ हैं मनुश्य जीवन का उद्देष य ही सत्य को मानना, मनवाना व प्रचार करना तथा असत्य को छोड़ना, छुड़वाना व निश्पक्ष भाव से समाज हित में खण्डन करना आदि हैं यह पुस्तक अपने उद्देष य में पूर्ण सफल रही हैं इसके प्रकाष ान के लिए हम इसके प्रकाष ाक श्री प्रभाकरदेव आर्य जी को साधुवाद देते हैं इसके सम्पादक महोदय जी को भी उनके प्रष ंसनीय सत्प्रयास के लिए हम धन्यवाद करते हैं

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121